पाठ - मनुष्यता

व्याख्या

1. विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
   मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
   हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
   मारा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
   वही पशु- प्रवृति है कि आप आप ही चरे,
   वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

मर्त्य – मृत्यु
वृथा – बेकार
यों – ऐसे
प्रवृनि – प्रवृति

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि मनुष्यों को कैसा जीवन जीना चाहिए।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि हमें यह जान लेना चाहिए कि मृत्यु का होना निश्चित है, हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। कवि कहता है कि हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि लोग हमें मरने के बाद भी याद रखे। जो मनुष्य दूसरों के लिए कुछ भी ना कर सकें, उनका जीना और मरना दोनों बेकार है। मर कर भी वह मनुष्य कभी नहीं मरता जो अपने लिए नहीं दूसरों के लिए जीता है, क्योंकि अपने लिए तो जानवर भी जीते हैं। कवि के अनुसार मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्यों के लिए मरे अर्थात जो मनुष्य दूसरों की चिंता करे वही असली मनुष्य कहलाता है।*

2. उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
   उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
   उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती;
   तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
   अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
   वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

उदार – महान ,श्रेष्ठ
सजीव – जीवित
बखानती – गुण गान करना
कूजती – करना
धरा – धरती
अखण्ड – जिसके टुकड़े न किए जा सकें
कृतघ्न – ऋणी , आभारी
असीम – पूरा

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि बताना चाहता है कि जो मनुष्य दूसरों के लिए जीते हैं उनका गुणगान युगों – युगों तक किया जाता है।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में दूसरों की चिंता करता है उस महान व्यक्ति की कथा का गुण गान सरस्वती अर्थात पुस्तकों में किया जाता है। पूरी धरती उस महान व्यक्ति की आभारी रहती है। उस व्यक्ति की बातचीत हमेशा जीवित व्यक्ति की तरह की जाती है और पूरी सृष्टि उसकी पूजा करती है। कवि कहता है कि जो व्यक्ति पुरे संसार को अखण्ड भाव और भाईचारे की भावना में बाँधता है वह व्यक्ति सही मायने में मनुष्य कहलाने योग्य होता है।*

egyanarchive

3. क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

क्षुधार्त – भूख से परेशान
करस्थ – हाथ की
परार्थ – पूरा
अस्थिजाल – हड्डियों का समूह
उशीनर क्षितीश – उशीनर देश के राजा शिबि
सहर्ष – ख़ुशी से
शरीर चर्म – शरीर का कवच

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि ने महान पुरुषों के उदाहरण दिए हैं जिनकी महानता के कारण उन्हें याद किया जाता है।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि पौराणिक कथाएं ऐसे व्यक्तियों के उदाहरणों से भरी पड़ी हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों के लिए त्याग दिया जिस कारण उन्हें आज तक याद किया जाता है। भूख से परेशान रतिदेव ने अपने हाथ की आखिरी थाली भी दान कर दी थी और महर्षि दधीचि ने तो अपने पूरे शरीर की हड्डियाँ वज्र बनाने के लिए दान कर दी थी। उशीनर देश के राजा शिबि ने कबूतर की जान बचाने के लिए अपना पूरा मांस दान कर दिया था। वीर कर्ण ने अपनी ख़ुशी से अपने शरीर का कवच दान कर दिया था। कवि कहना चाहता है कि मनुष्य इस नश्वर शरीर के लिए क्यों डरता है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो दूसरों के लिए अपने आप को त्याग देता है।*

4. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धभाव बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?
अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

सहानुभूति – दया,करुणा
महाविभूति – सब से बड़ी सम्पति
वशीकृता – वश में करने वाला
मही – ईश्वर
विरुद्धवाद – खिलाफ होना

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि ने महात्मा बुद्ध का उदाहरण देते हुए दया ,करुणा को सबसे बड़ा धन बताया है।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि मनुष्यों के मन में दया व करुणा का भाव होना चाहिए , यही सबसे बड़ा धन है। स्वयं ईश्वर भी ऐसे लोगों के साथ रहते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं जिनसे लोगों का दुःख नहीं देखा गया तो वे लोक कल्याण के लिए दुनिया के नियमों के विरुद्ध चले गए। इसके लिए क्या पूरा संसार उनके सामने नहीं झुकता अर्थात् उनके दया भाव व परोपकार के कारण आज भी उनको याद किया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। महान उस को कहा जाता है जो परोपकार करता है वही मनुष्य, मनुष्य कहलाता है जो मनुष्यों के लिए जीता है और मरता है।*

egyanarchive

5. रहो न भूल के कभी मदांघ तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीन बन्धु के बड़े विशाल हाथ हैं।
अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

मदांघ – घमण्ड
चित्त – मन में
तुच्छ – बेकार
त्रिलोकनाथ – ईश्वर
सनाथ – जिसके पास अपनों का साथ हो
दीनबंधु – ईश्वर
अनाथ – जिसका कोई न हो
अधीर – उतावलापन

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि सम्पति पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए और किसी को अनाथ नहीं समझना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ हैं।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि भूल कर भी कभी संपत्ति या यश पर घमंड नहीं करना चाहिए। इस बात पर कभी गर्व नहीं करना चाहिए कि हमारे साथ हमारे अपनों का साथ है क्योंकि कवि कहता है कि यहाँ कौन सा व्यक्ति अनाथ है ,उस ईश्वर का साथ सब के साथ है। वह बहुत दयावान है उसका हाथ सबके ऊपर रहता है। कवि कहता है कि वह व्यक्ति भाग्यहीन है जो इस प्रकार का उतावलापन रखता है क्योंकि मनुष्य वही व्यक्ति कहलाता है जो इन सब चीजों से ऊपर उठ कर सोचता है।*

6. अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु जो बढ़ा रहे बड़े-बड़े।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी।
रहो न यां कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

अनंत – जिसका कोई अंत न हो
परस्परावलंब – एक दूसरे का सहारा
अंतरिक्ष – आकाश
अमर्त्य -अंक — देवता की गोद
समक्ष – सामने
अपंक – कलंक रहित

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि कलंक रहित रहने व दूसरों का सहारा बनने वाले मनुष्यों का देवता भी स्वागत करते हैं।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि उस कभी न समाप्त होने वाले आकाश में असंख्य देवता खड़े हैं, जो परोपकारी व दयालु मनुष्यों का सामने से खड़े होकर अपनी भुजाओं को फैलाकर स्वागत करते हैं। इसलिए दूसरों का सहारा बनो और सभी को साथ में लेकर आगे बढ़ो। कवि कहते हैं कि सभी कलंक रहित हो कर देवताओं की गोद में बैठो अर्थात यदि कोई बुरा काम नहीं करोगे तो देवता तुम्हें अपनी गोद में ले लेंगे। अपने मतलब के लिए नहीं जीना चाहिए अपना और दूसरों का कल्याण व उद्धार करना चाहिए क्योंकि इस मरणशील संसार में मनुष्य वही है जो मनुष्यों का कल्याण करें व परोपकार करें।*

7. 'मनुष्य मात्रा बन्धु हैं' यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।

फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
अनर्थ है कि बन्धु ही न बन्धु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

बन्धु – भाई बंधु
अंतरैक्य – आत्मा की एकत, अंतःकरण की एकता
विवेक – समझ
प्रमाणभूत – साक्षी
स्वयंभू – परमात्मा,स्वयं उत्पन्न होने वाला
व्यथा – दुःख,कष्ट

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। अतः हम सभी मनुष्य एक – दूसरे के भाई – बन्धु हैं।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे के भाई – बन्धु हैं।यह सबसे बड़ी समझ है। पुराणों में जिसे स्वयं उत्पन्न पुरुष मना गया है, वह परमात्मा या ईश्वर हम सभी का पिता है, अर्थात सभी मनुष्य उस एक ईश्वर की संतान हैं। बाहरी कारणों के फल अनुसार प्रत्येक मनुष्य के कर्म भले ही अलग-अलग हों परन्तु हमारे वेद इस बात के साक्षी है कि सभी की आत्मा एक है। कवि कहता है कि यदि भाई ही भाई के दुःख व कष्टों का नाश नहीं करेगा तो उसका जीना व्यर्थ है क्योंकि मनुष्य वही कहलाता है जो बुरे समय में दूसरे मनुष्यों के काम आता है।*

8. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति,विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

शब्दार्थ

अभीष्ट – इच्छित
विपत्ति, विघ्न – संकट ,बाधाएँ
मार्ग – रास्ता
अतर्क – तर्क से परे
सहर्ष – अपनी खुशी से
सतर्क – सावधान यात्री

प्रसंग :- प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श भाग -2 ' से ली गई है। इसके कवि मैथिलीशरण गुप्त हैं। इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि यदि हम ख़ुशी से,सारे कष्टों को हटते हुए ,भेदभाव रहित रहेंगे तभी संभव है की समाज की उन्नति होगी।

व्याख्या :- *कवि कहते हैं कि मनुष्यों को अपनी इच्छा से चुने हुए मार्ग में ख़ुशी-ख़ुशी चलना चाहिए,रास्ते में कोई भी संकट या बाधाएं आये, उन्हें हटाते चले जाना चाहिए। मनुष्यों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आपसी समझ न बिगड़े और भेद भाव न बड़े। बिना किसी तर्क वितर्क के सभी को एक साथ ले कर आगे बढ़ना चाहिए तभी यह संभव होगा कि मनुष्य दूसरों की उन्नति और कल्याण के साथ अपनी समृद्धि भी कायम करें।*

पाठ्य पुस्तक प्रश्न

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?

उत्तर: मनुष्य मरणशील प्राणी है। इस संसार में प्रतिदिन लाखों लोगों की मृत्यु होती रहती है, परंतु उन पर कोई ध्यान नहीं देता है। उन्हीं में से कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मानवता की भलाई करते हुए जीवन बिताते हैं। ऐसे लोग मरकर भी अपने-अपने कार्यों के कारण

लोगों द्वारा याद किए जाते हैं तथा दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहते हैं और आने वाली पीढ़ी को राह दिखाते हैं। कवि ने सत्कार्यों में लीन व्यक्ति को मिलने वाली ऐसी मौत को 'सुमृत्यु' कहा है।

प्रश्न 2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?
उत्तर: उदार व्यक्ति की पहचान उसके सत्कार्यों, उसकी परोपकारिता तथा दूसरों के लिए अपना सर्वस्व त्याग देखकर की।
जा सकती है अर्थात् उदार व्यक्ति के मन, वचन, कर्म से संबंधित कार्य मानव मात्र की भलाई के लिए ही होते हैं। यही उसकी पहचान है अथवा यही माध्यम है उसकी पहचान का।

प्रश्न 3. कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता के लिए क्या संदेश दिया है?
उत्तर: कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर मनुष्यता के लिए यह संदेश दिया है कि दूसरों की भलाई का अवसर मिलने पर कभी भी ऐसा अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। कवि ने बताना चाहा है कि इन दानवीरों और परोपकारियों का जीवन परोपकार एवं त्याग से भरपूर था। वास्तव में इनका जीना और मरना दोनों के मूल में ही परोपकार था। ऋषि दधीचि ने मानवता की भलाई के लिए अपनी हड्डियाँ दान दे दी तो कर्ण ने अपनी जान की परवाह किए बिना कवच और कुंडल दान दे दिया। ऐसा परोपकार पूर्ण कार्य करने के कारण उनका जीवन धन्य हो गया। इस तरह कवि ने इन महापुरुषों के उदाहरण के माध्यम से हमें त्याग और परोपकार करने का संदेश दिया है।

प्रश्न 4. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?
उत्तर: कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में, सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।"

प्रश्न 5. "मनुष्य-मात्र बंधु हैं' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: 'मनुष्य मात्र बंधु है' से हमें ज्ञात होता है कि सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। वास्तव में जब सभी मनुष्य उसी एक अजन्मे पिता की संतान हैं और सभी में उसी का अंश समाया हुआ है तो सभी मनुष्यों में भाई-भाई का रिश्ता हुआ। इसके बाद भी यदि मनुष्य मनुष्य से भेद करता है तो इसका तात्पर्य है कि वह अपने भाई से भेद करता है। अतः मनुष्य को परस्पर भेद-भाव त्यागकर सभी को अपना भाई समझकर मेल-जोल से रहना चाहिए और जरूरत के समय एक-दूसरे की मदद करना चाहिए।

प्रश्न 6. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?
उत्तर: कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है, क्योंकि एकता में ही बल होता है, जिससे हम संसार के किसी भी असंभव काम को संभव कर सकते हैं, जीवन में आने वाली प्रत्येक विघ्न-बाधा पर विजय प्राप्त कर सकते हैं तथा जीवन रूपी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इससे भाईचारे तथा सामाजिकता को भी बल मिलता है।

प्रश्न 7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।
उत्तर: 'मनुष्यता' कविता से हमें यह ज्ञान होता है कि मनुष्य को उदारमना होकर दूसरों की जरूरतों में काम आते हुए, निस्स्वार्थ भाव से परोपकार करते हुए जीवन बिताना चाहिए। वर्तमान स्थिति इसके विपरीत है क्योंकि मनुष्य में स्वार्थपरता और आत्मकेंद्रित होने की भावना बढ़ती जा रही है। वह सभी काम अपनी स्वार्थपूर्ति और भलाई के लिए करता है। मनुष्य के पास धन आते ही वह अहंकार भाव से भर उठता है, जबकि मनुष्य को घमंड नहीं करना चाहिए। जिस ईश्वर की कृपा से उसके पास धन आया है वही ईश्वर दूसरों की मदद के लिए भी तैयार रहता है, इसलिए किसी को कमज़ोर और अनाथ समझने की भूल नहीं करना चाहिए। मनुष्य को सदैव विनम्र होकर दूसरों की भलाई करते हुए जीना चाहिए।

प्रश्न 8. ‘‘मनुष्यता’ कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर: ‘मनुष्यता’ कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि संसार में आकर मनुष्य स्वार्थ रहित होकर दीन-हीन, निर्बल एवं जरूरतमंद की सेवा करते हुए ऐसे सत्कर्म करें ताकि मृत्यु के बाद अमर हो जाए। मनुष्य मात्र बंधु है, इस तथ्य से अवगत होकर संसार के हर मानव के साथ मानवता का व्यवहार करें।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही; वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही। विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा, विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

उत्तर: भाव यह है कि मनुष्य के पास धन-बल और यश आ जाने पर भी उसे अपनी सहानुभूति भावना बनाए रखना चाहिए। सहानुभूति के बिना वह दूसरों के सुख-दुख और पीड़ा को अपना नहीं समझ सकेगा। सहानुभूति के अभाव में वह परोपकार के लिए प्रेरित नहीं हो सकेगा। सहानुभूति वास्तव में महाविभूति है। सहानुभूति और परोपकार के कारण लोग वश में हो जाते हैं। बुद्ध के विरुद्ध उठा विरोध उनकी दयाभावना के आगे न टिक सका। जो लोग विनम्र हैं उनके सामने सारी दुनिया झुकने को तैयार रहती है।

प्रश्न 2. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में, सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में। अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं, दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

उत्तर: इन पंक्तियों का भाव है कि मनुष्य को कभी भी तुच्छ तथा नश्वर धन के लोभ में आकर अहंकार नहीं करना चाहिए, अर्थात् धन के आ जाने पर मनुष्य को इसपर इतराना नहीं चाहिए। इस संसार में कोई भी त्रिलोकीनाथ के साथ होते हुए अनाथ नहीं है। उस दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं। वे सभी की सहायता हेतु दया बरसाने वाले हैं।

प्रश्न 3. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए, विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए। घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी, अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

उत्तर: भाव यह है कि मनुष्य अपने स्वभाव, रुचि एवं पसंद के कारण अपना जीवन लक्ष्य निर्धारित करता है। उसने जो भी लक्ष्य निर्धारित किया है उसकी प्राप्ति के लिए निरंतर कदम बढ़ाना चाहिए। इस मार्ग में भी जो रुकावटें आती हैं उनको धक्का देकर आगे बढ़ना चाहिए। ऐसा करते हुए हमें आपसी एकता और तालमेल भी बनाए रखना चाहिए ताकि कोई मतभेद न उभर सके। मनुष्य को चाहिए कि वह बिना किसी विवाद के सावधानीपूर्वक अपनी मंजिल की ओर बढ़ता रहे।

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1.

अपने अध्यापक की सहायता से रतिदेव, दधीचि, कर्ण आदि पौराणिक पात्रों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर:

1. राजा रतिदेव – त्याग और अतिथि-सत्कार का प्रतीक

- **ग्रंथ वर्णन:** भागवत पुराण
- **कथा:** राजा रतिदेव बहुत ही **त्यागी, दानी और अतिथि-सेवी** थे। एक बार 48 दिन उपवास करने के बाद जैसे ही उन्हें थोड़ा भोजन मिला, तीन बार भूखे-अतिथि आ गए — एक ब्राह्मण, एक शूद्र और एक चांडाल।
- रतिदेव ने तीनों को भोजन दे दिया और स्वयं भूखा रह गया।
- इससे **ईश्वर स्वयं प्रसन्न** होकर उन्हें दर्शन देते हैं और कहते हैं – *"जो दूसरों के लिए जीते हैं, वही सच्चे भक्त हैं।"*

2. महर्षि दधीचि – आत्मबलिदान का आदर्श

- **ग्रंथ वर्णन:** ऋग्वेद, भागवत, स्कंद पुराण
- **कथा:** जब राक्षस वृत्रासुर को कोई भी अस्त्र नहीं मार सकता था, तब भगवान इन्द्र के आग्रह पर दधीचि ने **अपनी हड्डियाँ दान में दे दीं**, जिससे वज्र अस्त्र बना।
- उन्होंने कहा – *"यदि मेरे प्राणों से देवताओं का कल्याण होता है, तो मैं इसे सौभाग्य मानता हूँ।"*
- इसलिए वे **बलिदान और राष्ट्रसेवा** के महान प्रतीक माने जाते हैं।

3. कर्ण – दानवीर और धर्म-पालक योद्धा

- **ग्रंथ वर्णन:** महाभारत, रश्मिरथि
- **कथा:** कर्ण कुंती और सूर्यदेव के पुत्र थे, परंतु जीवन भर सूतपुत्र कहलाए।
- वे **अतुलनीय योद्धा**, **अर्जुन के प्रतिद्वंद्वी**, और **दानवीर** के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- उन्होंने *कभी भी याचक को खाली नहीं लौटाया*, यहाँ तक कि युद्ध से पहले अपना *कवच-कुंडल भी दान कर दिए।*
- कर्ण धर्मनिष्ठ थे लेकिन कर्तव्य के कारण कौरवों का साथ दिया।

प्रश्न 2. "परोपकार' विषय पर आधारित दो कविताओं और दो दोहों का संकलन कीजिए। उन्हें कक्षा में सुनाइए।

उत्तर:

कविता 1: "परोपकार"

परोपकार से बढ़कर, कोई धर्म नहीं होता,
दूसरों के दुख हरना, सच्चा कर्म यही होता।
जो जलता दीप दूसरों के लिए,
वही जीवन सार्थक कहिए।
हाथ जोड़ कर विनती है यही,
मन में सेवा का भाव रहे सही।
दया, प्रेम, करुणा को अपनाइए,
मानवता की राह चलिए, परोपकार निभाइए।

कविता 2: "जीवन का सार"

नदियाँ बहती हैं औरों को जल देने,
वृक्ष खड़े हैं छाया फल सबके लिए देने।
जीवन का अर्थ तभी समझ आता है,
जब कोई औरों के लिए मुस्कराता है।
अपने लिए तो सब जीते हैं यहाँ,
जो दूसरों के लिए जिए, वही कहलाए सच्चा मानव जहाँ।

दो प्रसिद्ध दोहे

1. पर हित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नाही अधमाई।
— *गोस्वामी तुलसीदास*

egyanarchive

अर्थ: दूसरों की भलाई से बड़ा कोई धर्म नहीं, और दूसरों को कष्ट देना सबसे बड़ा अधर्म है।

2. संतन को कहा सीकरी सों काम,
आपु फँसे दुःख पाइयैं, दूसर दें दुःख नाम॥
— *कबीर*
अर्थ: संतों को राजा-महाराजाओं की चापलूसी या स्वार्थ से कुछ नहीं लेना। वे अपना सुख त्यागकर भी दूसरों का दुख दूर करते हैं।

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविता 'कर्मवीर' तथा अन्य कविताओं को पढ़िए तथा कक्षा में सुनाइए।

उत्तर:

1. कविता: कर्मवीर

कवि: अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रह के निज नाम करो,
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो जग को निश्चय अपना,
कह दो सबसे हँस के सपना।
छोड़ो व्यर्थ निराशा गाना,
बनना हो तो बनो दिवाना।
कठिनाइयों में मुस्काना सीखो,
सच पूछो तो यही काम करो।
नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।

भावार्थ:
यह कविता कर्म के महत्व को दर्शाती है। कवि कहता है कि मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए। उसे साहस और आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहना चाहिए।

2. कविता: उठो! जागो! कुछ करो!

कवि: अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

उठो, जागो, समय बीतता जा रहा,
जो खो गया, वह फिर नहीं आता रहा।
नयन खोल कर देखो, प्रभात आ गया,
नव कार्यों का अवसर हाथ आ गया।

भावार्थ:
यह कविता समय के महत्व और जागरूकता का संदेश देती है। कवि प्रेरित करता है कि व्यक्ति को आलस्य त्यागकर समय का सदुपयोग करना चाहिए।

egyanarchive

प्रश्न 2.

भवानी प्रसाद मिश्र की 'प्राणी वही प्राणी है' कविता पढ़िए तथा दोनों कविताओं के भावों में व्यक्त हुई समानता को लिखिए।

उत्तर:

यह दोनों कविताएँ **मानवता और सच्चे मनुष्य के गुणों** पर गहरा प्रकाश डालती हैं। नीचे दोनों कविताओं के भावों का संक्षिप्त सार और **उनके बीच समानता** दी गई है।

1. भवानी प्रसाद मिश्र की कविता: 'प्राणी वही प्राणी है'

मुख्य भाव:

इस कविता में कवि कहते हैं कि *सच्चा प्राणी (मनुष्य)* वही है —

- जो **दूसरे की पीड़ा को समझे**,
- **संवेदनशील** हो,
- और **स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों की भलाई के लिए सोचे।**

"प्राणी वही प्राणी है
जो प्राणों से प्राण जोड़ता है
जो औरों के दुख से दुखी होता है..."

अर्थ: मनुष्य वही है जो सिर्फ जीवित नहीं, बल्कि संवेदना और करुणा के साथ जीता है।

2. मैथिलीशरण गुप्त की कविता: 'मनुष्यता'

मुख्य भाव:

इस कविता में गुप्त जी बताते हैं कि *मनुष्य होने का अर्थ* केवल जन्म लेना नहीं है,
बल्कि वह मनुष्य है:

- जो **परहित में लगा रहे**,
- **सच्चरित्र** और **सहृदय** हो,
- और **सामाजिक उत्तरदायित्व** निभाए।

"वसुधा विभव भूषित राम-राज्य हो
यही है मनुष्यता का मर्म।"

समानता (भाव-साम्य):

बिंदु	'प्राणी वही प्राणी है'	'मनुष्यता'
1. मानवता का अर्थ	दूसरों के दुख-सुख में सहभागी होना	केवल शरीर नहीं, हृदय से भी मनुष्य बनना
2. स्वार्थ से ऊपर उठना	निजी सुख से अधिक सामूहिक कल्याण	दूसरों के लिए जीना ही मनुष्यता
3. संवेदनशीलता	करुणा और सहानुभूति को आवश्यक माना	दूसरों की पीड़ा को समझने की योग्यता
4. मनुष्यता की परिभाषा	प्राणों से प्राण जोड़ने वाला ही सच्चा मनुष्य	व्यवहार और चरित्र से ही मनुष्य महान

दोनों कविताएँ हमें यह सिखाती हैं कि **मनुष्यता सिर्फ देह नहीं, एक जीवित भाव है — करुणा, दया, और परोपकार का।**